Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

राष्ट्रीय सेवा योजना का राष्ट्र निर्माण में योगदान का अध्ययन

डॉ. प्रदीप कुमार भिमटे*

* सहा. प्राध्याापक एवं राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम अधिकारी, शास. महाविद्यालय, लालबर्रा, जिला बालाघाट (म. प्र.) भारत

प्रस्तावना – किसी भी राष्ट्र की प्रगति एवं खुशहाली में शिक्षा व्यवस्था का बहुत महत्व पूर्ण योगदान रहा है। आजादी के बाद भारत में शिक्षा व्यवस्था में क्रांतिकारी बदलाव देखने को मिले है। तथा राष्ट्रीय शिक्षा नितियों में समय-समय में बदलाव लाए गए जिससे की राष्ट्रीय प्रगति में नए आयाम प्राप्त हो सके। इसी व्यवस्था के अन्तर्गत राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लाई गई जो 21 वी सदी की पहली शिक्षा नीति है। जिसका लिये हमारे देश के विकास के अनिवार्य आवश्यकताओ को पूरा करना है। यह नीति भारत की परम्पदरा और सांस्कृतिक मुल्यो के आधार पूरा कर सके। राष्ट्रीय शिक्षा नीति प्रत्येक व्यक्ति में निहित रचनात्मक क्षमताओं के विकास पर बल देती है। यह नीति इस सिद्धांतो पर आधारित है कि शिक्षा से न केवल साक्षरता सख्या ज्ञान जैसी बुनयादी क्षमताओ के साथ साथ उच्चतर स्तर की तार्किक और समस्या समाधान सम्बंधी क्षमताओ का विकास हो सके।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में राष्ट्रीय सेवा योजना को एक विषय के रुप में विद्यार्थियो को पसंद के रुप में चुनने तथा उसके राजगार प्राप्ती कर सके ओपन इलेक्टिव विषय के रुप चुनने का अवसर होता है। राष्ट्रीय सेवा योजना वर्तमान समय में शिक्षा के साथ साथ विद्यार्थियो के व्यक्तित्व में बदलाव लाने तथा राष्ट्र की सेवा का सबसे अच्छा माध्यम है प्रारीभ से ही छात्रो को राष्ट्रीय सेवा के प्रति जागरुक करने का प्रयत्न होता रहा है सन 1950 में प्रथम शिक्षा आयोग ने विद्यार्थियो को राष्ट्रीय सेवा के लिए भावना के आधार पर प्रवेश के लिए संस्तुति की। इसके साथ ही तत्कालीन प्रधानमंत्री प. जवाहर लाल नहरु के सुझाव पर डॉ. सी डी देशमुख की अध्यक्षता में आयोग बनाया गया जिसका उद्देश्य छात्रो को स्नातक कक्षाओ में प्रवेश के पूर्व राष्ट्रीय सेवा अनिवार्य रुप सें करने की प्रोफेसर के जी सैउद्दीन जो विभिन्न देशो में युवाओ की राष्ट्रीय सेवाओ का अध्ययन कर चुके थे उनका कहना था की राष्ट्रीय सेवा स्वंय सेवका के आधार पर प्रारंभ कि जानी चाहिए प्रारंभ से ही राष्ट्रीय सेवा योजना की पृष्ठ भूमि में चिंतन की धारा रही है। एक विद्यार्थी को उच्च शिक्षा संबधी सुविधाए उपलब्ध कराने के लिए समाज को बहुत कुछ व्यय करना पड़ता है। अत: यह त्रण उतारने के लिए उसे कम से कम अपने आस पास के समुदाय में कुछ समाज सेवा के कार्य अवश्य करना चाहिए। जिस समाज में हम रहते है उसके प्रति भी हमे अपना दायित्व निभाना होता है। स्वतंत्र देश में केवल राजनैतिक स्वतंत्रता ही पर्याप्त नही है अपितु आर्थिक एवं समाजिक स्तर पर बेहतर कार्य करके इन बुराईयो कम कर सके इसमे उच्च शिक्षित युवाओ कि अहम भूमिका है यदि इन युवा वर्ग को समय पर पर्याप्त मार्ग दर्शन तथा अवसर मिले तो असमानता कि खाई को पाटने में कारगार साबित होंगे। भविष्य में देश की बागडोर सभालने वाली पीढी को समाज के विभिन्न वर्गो को तथा दलितो एवं शोषित लोगो की समस्याओं का प्रत्यक्ष एवं व्यवहारिक बोध हो ताकि वह उनकी एवं स्वयं की समस्याओ को हल कि दिशा में प्रवृत हो सके। 18 से 25 वर्ष की आयु में आदर्शवाद, देशप्रेम और कुछ कर गुजरने की चाहत से भरी हुई तरुणाई को ऐसे संस्कार एवं मार्गदर्शन दिए जाने चाहिऐ जो कि उन्हे श्रम की निष्ठा तथा प्रजातार्न्रिक विचारधारा, वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं अनुशासन रख सके। राष्ट्रीय सेवा योजना के क्रियावयन में प्रशासनिक तथा समाजिक सरोकारो कि महत्वपूर्ण भूमिका है। मध्यप्रदेश की राष्ट्रीय सेवा योजना की गतिविधियाँ देश में अग्रणी रही है यह सब स्वयं सेवको की निष्ठा एवं सकारात्मक सोच से ही सभंव हो सका है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जन्म शताब्दी 24 सिंतबर 1969 से ही राष्ट्रीय सेवा योजना आरंभ की गई है। इस इकाई से अनेक विद्यार्थी जुडकर राष्ट्र की निरंतर कर रहे है।

शब्द कुंजी – राष्ट्रीय सेवा योजना, युवा, व्यक्तित्व विकास।

अध्ययन की शोध प्रविधि – प्रस्तुत अध्ययन द्वितीयक संमको पर आधारित है, जिसमें मुख्य रुप से आकड़ों से संग्रहण हेतु शासकीय, पत्र-पत्रिकाओं, सख्यिकीय पुस्तिका, इन्टरनेट आदि का सहारा लिया गया है। अध्ययन की प्रासंगिकता - प्रत्येक शोध कार्य का एक निश्चित उद्देश्य एवं प्रत्येक उद्देश्यपूर्ण कार्य का अपना महत्व होता है उपलब्ध साहित्य की समीक्षा से स्पष्ट होता है राष्ट्रीय सेवा योजना के महत्व को रेखांकित किया गया है जिससे युवा जुड़कर राष्ट्र की निस्वार्थ भाव से सेवा करके स्वयं का राष्ट्र के लिए योगदान सुनिश्चित कर सकते है। इस कार्यो से राष्ट्रीय प्रेम एवं देश सेवा का युवाओं में जोश जज्बा तथा उत्साह उत्पन्न होगा तथा सामाजिक सेवा सांस्कृतिक मूल्यों को स्थापित करने में सहायता प्रदान होगी।

राष्ट्रीय सेवा योजना के उद्देश्य- समाज सेवा के माध्यम से विद्यार्थीयो के व्यक्तित्व का विकास करना है देश की सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिणक, सांस्कृातिक एवं ऐतिहासिक मुल्यो से अवगत कराना है।

राष्ट्रीय सेवा योजना की थीम- स्वास्थ्य जन स्वतच्छता एवं व्यकक्तिगत स्वास्थ रही है सत्र 2024-25 के लिए लक्ष्य थीम - 'मेरा युवा भारत माय भारत के लिए युवा डिजिटल साक्षरता के लिए युवा।'

राष्ट्रीय सेवा योजना का लायल – शिक्षा द्वारा समाजसेवा एवं समाज सेवा द्वारा शिक्षा है इस लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थीयो से अपेक्षा कि जाती कि वे जो जिस समाज में कार्य करते है उसे समझने का प्रयास करे समुदाय कि तुलना में स्वयं को समझना समुदाय की जरूरत और समस्याओं की पहचान करना तथा उन्हें समस्या के समाधान की प्रक्रिया में भागीदारी

बनाना स्वयं में सामाजिक एवं नागरिक जिम्मेदारी का बोध विकसित करना समूह में रहने और जिम्मेदारियां को बांटने के लिए जरूरी क्षमता विकसित करना, नेतृत्व गुण एवं लोकतांत्रिक प्रवृत्ति विकसित करना, राष्ट्रीय अखंडता और सामाजिक सदभाव बनाए रखना।

योजना के क्रियान्वयन में प्रशासनिक एवं सामाजिक सरोकारों की अहम् भूमिका – प्रदेश की राष्ट्रीय सेवा योजना की गतिविधियों में देश में अग्रणी रही है। यह सब युवा पीढ़ी की सकारात्मक सोच से ही संभव हुआ है। भारत में युवा प्रवर्तक राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जन्म शताब्दी 24 सितंबर 1969 से राष्ट्रीय सेवा योजना आरंभ की गई थी। राष्ट्रीय सेवा योजना का उद्देश्य समाज सेवा के माध्यम से विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का विकास करना है। इसका लक्ष्य शिक्षा द्वारा समाज सेवा तथा समाज सेवा के माध्यम से जीवन मूल्यों की शिक्षा प्राप्त करना जिससे कि विद्यार्थी जिस समाज में वह कार्य करे उससे वह बेहतर तरीके से समझने का प्रयास करें एवं समाज की मूलभूत आवश्यकताओं का अनुभव करें, उनकी कठिनाइयों को समझने तथा यथासंभव समस्या के समाधान के लिए सक्रिय रहे। स्वयं में सामाजिक एवं नागरिक भावना के दायित्व का बोध हो सके। सामाजिक सहभागिता के लिए निपुणता प्राप्त करें।

राष्ट्रीय सेवा योजना का प्रतीक चिन्ह उड़ीसा के कोणार्क स्थित सूर्य मंदिर के रथ के चक्र पर आधारित है। सूर्य मंदिर का यह विशाल चक्र सृजनात्मक शक्ति, गतिशीलता एवं अपार ऊर्जा का प्रतीक है जो काल एवं स्थान से परे जीवन में गति का महत्व बताता है। इस प्रतीक चिन्ह में मुख्य रूप से दो रंग आ रहे हैं। इसकी पृष्ठभूमि में नीला रंग ब्रम्हाण्ड का प्रतीक है तथा लाल रंग उत्साह एवं स्फूर्ति का इस प्रकार से यह प्रत्येक चिन्ह यह प्रदर्शित करता है कि स्वयंसेवकों को ऊर्जावान होकर वैश्विक स्तर पर परिवर्तन लाने एवं उसे उन्नत करने के लिए ऑठो पहर गतिमान रहना चाहिए। राष्ट्रीय सेवा योजना का सिद्धांत वाक्य Not me but you अर्थात मैं नहीं आप है। जो प्रजातांत्रिक ढंग से रहने के लिए तैयार करना है एवं नि:स्वार्थ सेवा भाव की भावना विकसित करना है। यह सिद्धांत हमें दूसरे व्यक्ति के दृष्टिकोण की सराहना करने वाले बनने के लिए प्रेरित करता है। साथ एक दूसरे के प्रति सम्मान के भाव जागृत करता है।

राष्ट्रीय सेवा योजना में नियमित गतिविधि – राष्ट्रीय सेवा योजना में नियमित गतिविधियों के अंतर्गत एक वर्ष में कम से कम 120 घंटे का कार्य करना होता है। अनिवार्य गतिविधियों पात्रता में अभिमुखीकरण में राष्ट्रीय सेवा योजना का दर्शन, प्रेरणा गीत, नागरिकता बोध, यातायात नियमो, का पालन, पी टी योग, खेल एवं पर्यावरण जागरुकता की गतिविधियों को सम्मिलित किया गया है। सत्र 2024-25 में राष्ट्रीय सेवा योजना के विद्यार्थियों ने मेंरी माटी मेंरा देश, एक पेड़ माँ के नाम, विद्यावान, साइबर सुरक्षा, डिजिटल साक्षरता, आपदा प्रबंधन, पर्यावरण संरक्षण, मतदाता जागरुकता, इको क्लब, एड्स के प्रति जागरूकता ।

जैसे अति महत्वपूर्ण कार्यक्रम सहभागिता करके स्वयं सेवक राष्ट्रीय दायित्व का भलीभांति निर्वहन करते हैं, अनुशासन में रहकर कार्यों को ईमानदारी के साथ पूर्ण करते है एवं मिलजुलकर कार्यों को करते हैं। इससे विद्यार्थियों में नेतृत्व क्षमता विकसित होती है तथा सामाजिक, राजनीति, एवं आर्थिक पहलुओ को जानने का अवसर प्राप्त होता है विद्यार्थियों में गीत संगीत के माध्यम से बहुमुखी प्रतिभा का विकास होता है ।

राष्ट्रीय सेवा योजना से व्यक्तित्व का विकास होता है सात दिवसीय विशेष शिविर में स्वयं सेवकों के साथ ग्रामीण जनो के मध्य जाकर, उनके सुझावों एवं सहयोग से स्वच्छता, पर्यावरण जागरूकता, नालियों की साफ सफाई एवं नारों के माध्यम से जन मानस में जन जागृति का संदेश दिया जाता है।

आज के वर्तमान समय में व्यक्तित्व विकास की महती आवश्यकता महसूस की जा रही है उनके लिखित एवं मौलिक संप्रेक्षण तथा संवाद, क्षमता होनी चाहिए साथ ही नेतृत्व देने एवं टीम के साथ काम करने की योग्यता, समस्या का समाधान करने की क्षमता किसी कार्यकम को आयोजित करने एवं संचालन करने की क्षमता विकसित करने में राष्ट्रीय सेवा योजना की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

विशेष शिविर– राष्ट्रीय सेवा योजना में नियमित गतिविधियों के तहत विद्यार्थियों को अपने रिक्त समय का सदुपयोग संरचनात्मक कार्य में करने का अवसर मिलता है। वर्ष एक बार गोद ग्राम या अन्य ग्राम में आयोजित शिविर में उन्हें जीवन का अमूल्य अनुभव प्राप्त करते हैं। सात दिवसीय विशेष शिविर इकाई के 50% विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य होता है। शिविर के माध्यम से विद्यार्थी ग्राम में प्रभात फेरी के माध्यम से जन जागरण करते हैं तथा राष्ट्रीय सेवा योजना की जानकारी दी जाती है। एक साथ मिलकर कार्य करना, परियोजना कार्य में समन्वय, के साथ हाथ बटाना या मिलकर कार्य करना आदि की सिख मिलती है। तथा शिविर के दौरान प्रत्येक स्वयं सेवक अनुशासन में रहकर राष्ट्रीय सेवा योजना के प्रति समर्पित भाव से कार्य करते है।

जागरूकता कार्यक्रम के आयोजनों में राष्ट्रीय सेवा योजना का सहयोग – 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' की शुरुआत भारत के प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी जी ने 22 जनवरी 2015 को पानीपत हरियाणा से की थी। इस योजना से पुरे जीवन काल में शिशु लिंगानुपात में कमी को रोकने में मदद मिली है। मतदाता जागरुकता, पोषण आहार, आद्र भूमि दिवस, विश्व पर्यावरण दिवस, युवा दिवस, सयुक्त राष्ट्रक संघ स्थापना दिवस, अग्नि शमन दिवस, गांधी जयंती एवं भारत के महापुरुषों के विचारों को जन-जन तक पहुंचाने में राष्ट्रीय सेवा योजना की हमेशा महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इस प्रकार के कार्यो से स्वयं सेवकों में समाज के प्रति संवेदनशीलता, जागरूकता एवं सेवा भाव की भावना पनपती है तथा समाज को जागरूक करने में अग्रणी भूमिका में रहते है जल है तो कल है, पर्यावरण के दुश्मन तीन पाउच पन्नीस पॉलिथीन, मानव मानव एक समान जात पात का मिटे निशान, सारे काम छोड़ दो सबसे पहले वोट दो जैसे अनेक प्रेरणादायी नारो से गांव-गांव में जाकर, शिविर तथा नियमीत गतिविधियो के माध्यम से समाज में जन जागरूकता का अभियान चलाया जाता है इससे जन मानस में कार्य करने तथा युवाओं को सहयोग देने की भावना पनपती है तथा प्रजातांत्रिक विचारधारा, वैज्ञानिक सोच एवं स्वप्रेरणा तथा अनुशासन की भावना प्रबल होती है ।

सुझाव :

1. राष्ट्रीय सेवा योजना में प्रवेश के लिए विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने के लिए सत्र के प्रारंभ में जानकारी दी जानी चाहिए।
2. नियमित गतिविधियों में विशेष शिविर के लिए अनुदान राशि में वृद्धि की जानी चाहिए ।
3. NCC की तरह NSS के स्वयंसेवकों के लिए ड्रेस कोड की राशि प्रदान की जानी चाहिए ।

4. विद्यार्थियों के सतत व्यापक मूल्यांकन में NSS के विद्यार्थियों को अतिरिक्त अंक प्रदान करने की नीति बननी चाहिए।

निष्कर्ष – राष्ट्रीय सेवा योजना के माध्यम से विद्यार्थियों में राष्ट्र के प्रति समर्पित भाव से कार्य करने की भावना विकसित होती है एवं युवाओं को उच्च शिक्षा के साथ–साथ पाठ्येतर गतिविधियों के भाग लेने से स्वयं सेवको के व्यक्तित्व में निखार आता है समुदाय से जुड़ाव होता है एवं समाज में व्याप्त सामाजिक बुराइयों को दूर करने में सहायता करते है तथा इस प्रकार के कार्यो से समाज के कमजोर वर्ग के प्रति सवेदंशीलता, सहानुभूति एवं मिलजुलकर कार्य करने की भावना उत्पन्न होती है एवं समय–समय पर आयोजित स्वास्थ्य शिविरो एवं पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रमों सहभागिता से नागरिक दायित्व का विकास होता है उन्हें राष्ट्र के प्रति प्रेम देश की एकता अखंडता एवं बंधुत्व बढ़ाने के लिए युवा वर्ग आगे रहकर कार्य करते हैं, जिसे नेतृत्व क्षमता बढ़ाने के साथ–साथ परिस्थितियों को समझने की शक्ति उत्पन्न होती है, अंत: राष्ट्रीय सेवा योजना अत्यंत महत्वपूर्ण इकाई है, जिससे जुड़कर युवा अपना बेहतर भविष्य बना सकता है। एवं राष्ट्र की निस्वार्थ भाव से सेवा में सदैव तत्पर रहते है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:–

1. राष्ट्रीय सेवा योजना के मैनुअल 2006 भारत सरकार युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय, नई दिल्ली।
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली।
3. उच्च शिक्षा विभाग विभागीय प्रशासकीय प्रतिवेदन वर्ष 2023–24।
4. राष्ट्रीय सेवा योजना भारतीय इंटरप्राइजेज, मथुरा, उत्तर प्रदेश।

****